हनुमान जी की आरती के बोल

आरती कीजै हनुमान लला की।
दुष्ट दलन रघुनाथ कला की॥
जाके बल से गिरिवर कांपे।
रोग दोष जाके निकट न झांके॥

आन्जनी पुत्र महा बलदाई।
संतन के प्रभु सदा सहाई॥
देवन आये जो लाल लंका।
सीता समेत वैद्य संदेशा॥

लंका जारी असुर संहारे।
सियाराम जी के काज संवारे॥
लक्ष्मण मूर्छित पड़े सकारे।
आनि संजीवन प्राण उबारे॥

पैठि पताल तोरि जम कारे।
अहिरावण की भुजा उखारे॥
बायें भुजा असुर दल मारे।
दाहिने भुजा संत जन तारे॥

सुरनार मुनि जन आरती उतारे।
जै जै जै हनुमान उचारे॥
कंचन थाल कपूर लूचा।
आरती करत अंजना माई॥

जो हनुमान जी की आरती गावे।

बसि बैकुंठ परमपद पावे॥

लौ चौरासी की महिमा सवारी।

कहत हैं बत सम्पति सन्तान की॥

देवी सर्व भूत हनुमान जी।

मंगल मूर्ति रूप हनुमान जी॥

हनुमान आरती के बोल का अर्थ

राम के प्रिय हनुमान की करें आरती

वह जो बुराई को नष्ट करता है और राम की शक्ति का प्रतीक है।

जिनके बल से पर्वत कांपते हैं,

रोग और दोष निकट नहीं आने पाते।

अंजनी के पुत्र, पराक्रमी,

भगवान जो सदैव अपने भक्तों की सहायता करते हैं।

वह जो राम का संदेश लंका तक लाया,

राक्षसों सहित लंका को आग के हवाले कर दिया गया।

उन्होंने राक्षसों का विनाश किया और राम के कार्यों को पूरा किया,

उन्होंने लक्ष्मण को पुनर्जीवित किया और उनकी जान बचाई।

वह पाताललोक तक गया और यम को वश में किया,

उन्होंने अहिरावण की भुजाएँ फाड़ डालीं।

उन्होंने अपनी बायीं भुजा से राक्षस सेना को मार डाला,

अपनी दाहिनी भुजा से उन्होंने साधु भक्तों की रक्षा की।

देवता, संत और मुनि उसकी स्तुति गाते हैं,
जय-जय-जय हनुमान का जप करते हैं।

एक सोने की थाली और कपूर की एक कटोरी के साथ,
अंजना मां आरती करती हैं.

हनुमान की आरती जो कोई गावे,
विष्णु का सर्वोच्च पद प्राप्त होगा।

वज्र के समान शक्तिशाली शरीर वाले की जय हो,
जो धन और संतान प्रदान करता है।

सभी प्राणियों की देवी, हनुमान जी,
हनुमान जी का मंगलकारी रूप.

Hanuman aarti